१ यीशु-परमेश्वर का महान वरदान

- उत्तम वरदान
- परमेश्वर की प्रतिज्ञा
- स्वर्गदूत और मरियम
- मरियम और इलीशिबा
- स्वर्गदूत और यूसुफ
- बैतलहम में यीशु का जन्म

एक उत्तम वरदान

यदि आपको अच्छी वस्तुओं में से चुनने का मौका मिले तो आप क्या चुनेंगे? शायद कुछ धन चुनेंगे। अन्य तन्दुरुस्ती, आनन्द या मित्रता को महत्व देना चाहेंगे जो धन सम्पत्ति से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

शायद आप वह आनन्द चाहेंगे जिसका अन्त न होता हो। लेकिन आप कैसे अनन्त काल तक जीवित रहेंगे? केवल सृष्टिकर्त्ता जिसने आपको जीवन दान दिया वही आपको अनन्त आनन्द दे सकता है। यही सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर है जिसने आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है बनाया है।

अनन्त आनन्द की प्राप्ति हमारी इच्छा पर आधारित नहीं है। परमेश्वर इतना प्रेम करता है कि आपका मित्र होने के लिए अपने पुत्र यीशु को भेजा।

जो यीशु को स्वीकार करेगा वही अनन्त आनन्द पाएगा। इसलिए यीशु ही आपका उत्तम वरदान है।

उत्तर लिखें

नीचे लिखे प्रश्नों के तीन उत्तर हो सकते हैं।
ठीक उत्तर के सामने सही (√) का चिन्ह लगाएं।

१. इनाम में आप क्या चाहेंगे?

.... क) धन-सम्पत्ति
.... ख) उच्च नाम
.... ग) मित्र जो आपको अनन्त आनन्द दे सके।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा

आप सचमुच यह जानना चाहेंगे कि यह उत्तम वरदान कैसे प्राप्त किया जाए। परमेश्वर ने धर्मशास्त्र बाईबल में इसका वर्णन किया है। इस पुस्तक को परमेश्वर का वचन कहते हैं क्योंकि परमेश्वर ने अपने भक्तों को बताया कि उन्हें क्या-क्या लिखना चाहिए।

यीशु के जन्म के सैकड़ों वर्ष पूर्व परमेश्वर ने नबियों को बताया कि क्या होने को है। इन भक्तों ने परमेश्वर के सन्देशों को बाईबल के प्रथम भाग में लिखा। परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी कि वह अपने पुत्र को जगत का उद्धारकर्त्ता होने को भेजेगा। नबियों ने लिखा कि:

- उद्धारकर्ता का जन्म बैतलहम नगर में होगा।
- उद्धारकर्ता का जन्म एक कुंवारी के द्वारा होगा।
- उद्धारकर्ता दाऊद के वंश से होगा।

उत्तर लिखें

२. किस धर्म पुस्तक में परमेश्वर ने उद्धारकर्ता के विषय में बताया?.....

३. क्या आपके पास बाइबल है?

.....

स्वर्गदूत और मरियम

यीशु के जन्म से ६७५ वर्ष पूर्व यशायाह नबी ने यह लिखाः

सुनो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। यशायाह ७:१४

इम्मानुएल का अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ।" वह समय आया जब परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। लगभग २००० वर्ष पूर्व परमेश्वर ने अपने एक स्वर्गदूत को सन्देश के साथ स्वर्ग से पृथ्वी पर एक कुंवारी मरियम के पास भेजा। लूका ने जो वैद्य था मरियम के इस अनुभव को बाईबल में इस प्रकार लिखाः

परमेश्वर ने अपने एक प्रधान स्वर्गदूत जिब्राईल को गलील के नासरत नगर में भेजा। यह सन्देश कुंवारी मरियम के पास भेजा गया जिसकी मंगनी यूसुफ से हो चुकी थी जो दाऊद राजा के वंश का था। स्वर्गदूत ने मरियम से कहा, "आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है।"

मरियम स्वर्गदूत के सन्देश से बहुत घबरा गई और सोचने लगी कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे मरियम, भयभीत न हो क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा। तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा और परम प्रधान परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। और यह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।"

मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।" स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पुत्र जो उत्पन्न होने

वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।" तब मरियम ने कहा, "देख मैं प्रभु की दासी हूं, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।" तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया। लूका १:२६-३८

परमेश्वर को प्रभु के नाम से भी पुकारा जाता है। मरियम कुछ समझ न पाई परन्तु परमेश्वर की नम्र दासी होने के कारण प्रभु की इच्छा पूरी करने को तैयार हो गई।

उत्तर लिखें

४. परमेश्वर ने जगत के उद्धारकर्ता की मां होने के लिए किस को चुना?

.....

मरियम और इलीशिबा

स्वर्गदूत से सन्देश पाने के बाद मरियम ने अपने शरीर में आश्चर्य कर्म का अनुभव किया। उसके एक पुत्र उत्पन्न होने को था जिसका सांसारिक पिता नहीं था। परमेश्वर ने अपने पुत्र उद्धारकर्ता यीशु की मां होने के लिए मरियम को चुना था। परन्तु मरियम के सामने एक समस्या आई। कौन स्वीकार करेगा कि उसके साथ यह हुआ? उसकी मंगनी यूसुफ बढ़ई से जो एक सज्जन पुरुष था हो चुकी थी। यह जानने पर कि मरियम गर्भवती है, यूसुफ बहुत घबराया। यदि वह उसे बदनाम करता तो मरियम पत्थरवाह की जाती। ऐसी दशा में मरियम क्या करती?

स्वर्गदूत ने आश्चर्य कर्म बताया जो परमेश्वर ने मरियम की चचेरी बहिन इलीशिबा के जीवन में किया था। शायद इसको समझे, इसलिए मरियम इलीशिबा और उसके पति जकरयाह के घर गई और तीन महीने वहां रही।

इलीशिबा पवित्र आत्मा से भर गई और बड़े शब्द से पुकार कर कहा, "तू स्त्रियों में धन्य है और तेरे पेट का फल धन्य है। और यह अनुग्रह मुझे कहां से हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई?"

तब मरियम ने कहा, "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर से आनन्दित हुई क्योंकि उसने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है। इसलिए देखो, अब से सब युग-युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे। क्योंकि सर्वशक्तिमान ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किया है।"
लूका १:४१-४९

मरियम एक सुन्दर स्त्री थी। वह परमेश्वर की उपासना करती और उसके वचन को जानती थी। एक बुद्धिमान, नम्र विश्वासी, आज्ञाकारी और दीन युवती थी। हम मरियम के कृतज्ञ हैं, जिसके द्वारा उद्धारकर्ता जगत में आया। स्वर्गदूत और इलीशिबा दोनों ने पहिचान लिया कि परमेश्वर ने मरियम को उद्धारकर्ता की मां होने को चुन लिया था। परन्तु उन्होंने मरियम की उपासना नहीं की। न हम ऐसा करते हैं। मरियम ने स्वयं कहा, "परमेश्वर मेरा उद्धारकर्ता है।"

उत्तर लिखें

५. मरियम की चचेरी बहिन का क्या नाम था?

.....

स्वर्गदूत और यूसुफ

जब यूसुफ को मालूम हुआ कि मरियम गर्भवती है तो उसने क्या किया?

यूसुफ जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था उसे चुपके से त्याग देने की मंसा की। जब वह इन बातों की सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, "हे यूसुफ दाऊद की

सन्तान, तू मरियम को अपने यहां लाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा।" इसलिए यूसुफ ने स्वर्ग दूत की आज्ञानुसार ही किया, और मरियम से विवाह कर लिया और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक यूसुफ उसके पास न गया: और उसने उसका नाम यीशु रखा। मत्ती १:१९-२१, २४, २५

उत्तर लिखें

६. स्वर्गदूत ने यूसुफ से क्या कहा?

.... क) मरियम से हुई मंगनी को तोड़ दे।

.... ख) मरियम से विवाह करे। उसका पुत्र पवित्र आत्मा से है।

.... ग) मरियम को भूल जाए।

बैतलहम में यीशु का जन्म

औगूस्तुस कैसर ने आज्ञा निकाली कि उसके साम्राज्य के लोगों के नाम लिखे जाएं। सो यूसुफ और मरियम जो दाऊद के घराने और वंश के थे नाम लिखवाने दाऊद के नगर बैतलहम को गए। मीका नबी ने नबूवत की थी कि बैतलहम में उद्धारकर्ता का जन्म होगा। यूसुफ और मरियम के लिए सराय में कोई जग़ह न थी। चरनी में उन्हें स्थान मिल गया जहां यीशु का जन्म हुआ। एक स्वर्गदूत ने कुछ गड़रियों को यह सुसमाचार सुनाया।

"मत डरो, क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिए होगा, कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए उद्धारकर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है और इसका तुम्हारे लिए यह पता है कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे।"

तब एकाएक स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया; "आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।" लूका २:१०-१४

और गड़रियों ने उद्धारकर्ता यीशु मसीह को चरनी में पाया। उन्होंने इस उत्तम वरदान के लिए परमेश्वर की स्तुति की। दूसरे देशों के ज्योतिषी भी यीशु की उपासना करने को आए। इसके बाद दुष्ट हेरोदेस राजा यीशु को मार डालना चाहता था परन्तु यूसुफ और मरियम यीशु के साथ मिश्र देश को भाग गए। बाद में वे नासरत में लौट आए और वहीं बालक यीशु बढ़ा।

उत्तर लिखें

७ परमेश्वर का उत्तम वरदान क्या है?

..... क) प्रसन्नता।

..... ख) तन्दुरुस्ती।

..... ग) उद्धारकर्ता यीशु मसीह, जो अनन्त जीवन देता है।